आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:22-01-15

हम भाग्यशाली बच्चों को आत्मा और परमात्मा का एक्यूरेट ज्ञान देकर हमें आत्म-अभिमानी बनाने वाले, निराकार बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारी नजर शरीरों पर नहीं जानी चाहिए, अपने को आत्मा समझो, शरीरों को मत देखो.

बाबा हमें अपनी मुरलीओ द्वारा आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान इसलिए देते है की हम स्वयं को आत्मा समझ उस परमात्मा, बाप को याद करें और सृष्टि चक्र के ज्ञान से स्वदर्शन चक्रधारी बने. हम बच्चों का यह भाग्य है कि सारे कल्प में कुछ गिनी-चुनी आत्माओं को ही यह ज्ञान मिलता है. यह ज्ञान धारण कर, आत्म-अभिमानी अवस्था में रहकर बाप को याद करते है तो आत्मा पतित से पावन बन जाती हैं और स्वदर्शन चक्रधारी बनने से अभी स्व-राज्य अधिकारी बनते हैं और भविष्य में राज्य-अधिकारी बनते हैं.

बाबा की आज की मुरली से आत्मा और परमात्मा पर कहे गये कुछ महा-वाक्यों को स्वयं को आत्मा समझकर पढ़ेंगे तो हमें अपनी अवस्था आत्म-अभिमानी बनाने में बाबा की मदद जरूर मिलेगी.

- बाबा ने बच्चों को समझाया है कि बाप तुम्हें अभी जो ज्ञान देते है इसको ही कहा जाता है रुहानी ज्ञान, जो एक निराकार शिव बाप से ही मिल सकता है. बच्चे जानते हैं हम आत्माओं का रुहानी बाप वह एक है, उनका रुप दिखाई नहीं पड़ता है. उस निराकार का चित्र भी है सालिग्राम मिसल. उनको ही निराकार परमात्मा कहा जाता हैं.

- बाबा कहते हैं मेरा आकार तुम मनुष्यों जैसा आकार नहीं हैं. लेकिन हर वस्तु का आकार जरूर होता हैं. उन सब में छोटे से छोटा आकार है आत्मा का. आत्मा बहुत छोटी है जो इन आंखों से देख नहीं सकते. तुम बच्चों ने दिव्य-दृष्टि से उनका साक्षात्कार किया है. है बहुत सूक्ष्म. इससे समझ सकते हैं, सिवाय परमपिता परमात्मा के आत्मा का ज्ञान कोई दे नहीं सकता.

- बाबा कहते है अभी तुम बच्चों ने जाना है कि हम आत्मा हैं, आत्मा को ही ८४ जन्मो का पार्ट बजाना है. अपने को आत्मा समझ मुझ परमपिता परमात्मा को जानो और याद करो. मैं ही इनमें (ब्रह्मा के तन में) प्रवेश कर तुम बच्चों को नॉलेज देता हूँ.

- बाबा कहते हैं बच्चे शिव जयन्ती मनाते हैं, परन्तु उनका शरीर तो देखने में नहीं आता. बाकी सब आत्माओं का अपना-अपना शरीर है. शरीर का ही नाम पड़ता है, परमात्मा का अपना शरीर ही नहीं इसलिए उनको परम आत्मा कहा जाता है. उनकी आत्मा का ही नाम शिव है और वह नाम कभी बदलता नहीं. बाकी सब आत्मायें (दैवी-देवतायें, सन्यासी, धर्म-स्थापक और अन्य आत्मायें) अपना शरीर बदलते है तो उनका नाम बदल जाता हैं. शिवबाबा कहते हैं मैं तो सदैव निराकार परम आत्मा ही हूँ.

- बाबा कहते हैं बच्चों को यह निश्चय पक्का करना पड़े कि मैं आत्मा हूँ. मेरा बाप परमात्मा है, वह कहते हैं मुझे याद करो तो मैं तुमको वर्सा दूँगा. मैं सब को सुख देने वाला हूँ. मैं सभी आत्माओं को अभी शांति-धाम ले जाता हूँ. जिन्होंने कल्प पहले बाप से वर्सा लिया होगा वही आकर वर्सा लेंगे, ब्राह्मण बनेंगे. ब्रह्मा मुख-वंशावली ब्राह्मण ही निराकार शिवबाबा की वंशावली हैं.

- बाबा कहते हैं तुम बच्चों को यह ज्ञान सिमरण कर अतीन्द्रिय सुख में रहना है. यह भी याद रहना चाहिए कि शिवबाबा हमें पढ़ाते है. वह है ऊंच ते ऊंच. अब हमको वापस घर जाना है. हमको देवता बनना है. दैवी गुण भी धारण करने हैं.

ॐ शांति.